आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2396 • उदयपुर, शुक्रवार 23 जुलाई, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्

सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

भुवनेश्वर में राशन–सेवा

नारायण सेवा संस्थान यों तो दिव्यांगता मुक्ति अभियान में प्रमुख रूप से सेवारत है किंतु कोरोना काल में जरूरतमंदों के लिये विविध प्रकार की सेवा में अग्रणी रहा है।

आप सभी के आशीर्वाद से देशभर के करीब 50 हजार परिवारों को राशन– सामग्री प्रदान करने का सौभाग्य पाया है। यह प्रक्रिया अनवरत जारी है।

ऐसा ही एक राशन वितरण शिविर नारायण गरीब परिवार राशन–योजना के अंतर्गत भुवनेश्वर में 14 जुलाई 2021 को आयोजित किया गया। नारायण सेवा संस्थान की इस शाखा द्वारा कुल 100 परिवारों को राशन–किट प्रदान किये गये। शिविर प्रभारी लालसिंह जी भाटी के अनुसार इस कार्यक्रम में जो अतिथिगण पधारे उनके शुभनाम निम्नलिखित हैं– मुख्य अतिथि श्री शरदकुमार जी दास (सचिव द ओड़िसा एसोशिएशन फॉर ब्लाइण्ड), विशिष्ट अतिथि श्री शेख समद कड़ापार (कोषाध्यक्ष) श्री कपिल जी साई, श्री रस्सी रंजन जी साहू (समाज सेवी) शिविर के लाभार्थी जन अत्यंत प्रसन्न थे।

संस्थान द्वारा भोपाल में कृत्रिम अंग वितरण शिविर

दिव्यांगजनों को कृत्रिम अंग लगे तो खुशी उनके चेहरों पर साफ दिखाई पड़ रही थी। 26 जून को भोपाल के मानस भवन में लगे कृत्रिम अंग वितरण समारोह के दूसरे दिन ऐसा ही दृश्य दिखाई दिया।

भोपाल उत्सव मेला समिति व नारायण सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस शिविर में मुख्य अतिथि श्री विश्वास जी सारंग (शिक्षामंत्री महोदय), अध्यक्ष श्री अशोक जी वली (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि श्री ओ.पी. बंसल जी, (विश्वास महासंघ अध्यक्ष) श्री कृष्णमोहन जी सोनी (पूर्व पार्षद) श्री रघुनंदन जी शर्मा (पूर्व सांसद महोदय एवं अध्यक्ष मानस भवन), श्री शलेन्द्र जी निगम (समाजसेवी), आदि उपस्थित थे।

शिविर प्रभारी अखिलेश जी अग्निहोत्री ने बताया कि 104 ओपीडी, 84 कृत्रिम व 20 कैलीपर्स वितरण किये गये। शिविर में भंवर सिंह जी, सुश्री रोली जी शर्मा, श्री नाथूसिंह जी, श्री भंवर सिंह जी, श्री सुनील जी, श्री लोगर जी, श्री फतेहलाल जी, श्री मुन्ना सिंह जी आदि की टीम का सहयोग रहा।

सेवा–जगत्

मानवता का प्रतिक, आपका सेवा संस्थान

नारायण सेवा संस्थान के सहयोग से रोटरी क्लब छतरपुर द्वारा कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन

नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में रोटरी क्लब छतरपुर के द्वारा छतरपुर शहर के इंग्लिश स्कूल में विशाल नि:शुल्क दिव्यांग कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के माध्यम से 47 दिव्यांगों को नारायण सेवा संस्थान के सदस्यों द्वारा कृत्रिम अंग लगाए गए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शहर के जाने–माने डॉक्टर राजकुमार जी अवस्थी रहें। डॉक्टर राजकुमार जी अवस्थी ने रोटरी क्लब और नारायण सेवा संस्थान के द्वारा दिव्यांगों के लिए लगाए गए इस शिविर की सराहना की साथ ही उन्होंने रोटरी क्लब के सदस्यों से दिव्यांगों के स्वरोजगार को दिशा में कार्य करने का आग्रह किया।

उल्लेखनीय है कि नारायण सेवा संस्थान के सहयोग से रोटरी क्लब छतरपुर के द्वारा 8 मार्च 2021 को शिविर लगाकर दिव्यांगों को लगाए जाने वाले कृत्रिम अंग के नाप लिए गए थे और शिविर के माध्यम से मरीजों को चिन्हित किया गया था। अप्रेल माह में शिविर लगाकर यह कृत्रिम अंग दिव्यांगों को लगाए जाने थे लेकिन प्रशासन के द्वारा लगाए गए कोरोना कर्फ्यू के कारण शिविर नहीं लग पाया था।

रविवार 11 जुलाई को नारायण सेवा संस्थान के सहयोग से रोटरी क्लब के द्वारा विशाल नि:शुल्क दिव्यांग कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण शिविर लगाया गया जिसमें 47 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाए गए। रोटरी क्लब छतरपुर के द्वारा अभी तक 184 मरीजों का उदयपुर ले जाकर इलाज भी कराया गया है।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन और माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण से हुआ। अतिथियों का पुष्पहारों से स्वागत रोटरी क्लब और इनरव्हील क्लब के सदस्यों ने किया।

स्वागत उद्बोधन इनरव्हील अध्यक्ष ज्योति जी चौबे ने दिया तथा सचिवीय प्रतिवेदन रोटरी क्लब के सचिव डॉ स्वतंत्र जी शर्मा ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में डॉ राजकुमार जी अवस्थी उदयपुर से पधारे हरि प्रकाश जी लड्ढा एवं उनकी टीम मौजूद रही।

समारोह में रोटरी क्लब के अध्यक्ष मुकेश जी चौबे, सचिव डॉ. स्वतंत्र जी शर्मा, एडिटर कामिनी जी सोनी, पूर्व अध्यक्ष अरुण जी राय, रामनरेश जी पाठक, पूर्व असिस्टेंट गर्वनर राकेश जी लोहिया, पंकज जी दोसाज, आनंद जी अग्रवाल, भोले जी साहू, हेमंत जी चानना, रघुनाथ जी शर्मा, सुरेन्द्र जी अग्रवाल, मदन लाल जी कुशवाह, अनुपम जी टिकरया, मोहन जी विलैया, श्रीमती दीप्ति जी शर्मा, कामिनी जी सोनी, रूपल जी दोसाज, संध्या जी टिकरया, सीमा जी अग्रवाल, किरन जी गुप्ता, रितु जी चौरसियां सहित नगर के गणमान्य लोग और पत्रकारगण मौजूद रहे।

नारायण सेवा संस्थान के प्रयास, आर्टिफिशियल मोड्यूलर पैर लगाया ग्यारह इंच छोटे पांव ने पहली बार छुई जमीन

मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले के ग्राम ब्यावरा की कुमारी केदार गुर्जर की आँखे खुशी से उस समय छलछला उठी, जब वह दोनों पैर जमीन पर टिकाए बिना किसी सहारे चलने लगी। नारायण सेवा संस्थान में उसके आर्टिफिशियल मोड्यूलर पैर लगाया गया। कुमारी केदार का एक पांव जन्म से दूसरे पांव से छोटा था। उम्र तो बढ़ती रही पर पांव करीब 11 इंच छोटा रह गया, जिससे उसे काफी परेशानियां उठानी पड़ी। हालात से उबरने के लिए केदार ने गांव में पांचवी पास करने के बाद भी आगे पढ़ने का निश्चय किया। लेकिन स्कूल 1 किमी दूर था। पापा उसे लाते–जाते। हायर सेकण्डरी के बाद बी.ए. भी गांव से 30 किमी दूर कॉलेज से पापा की मदद से ही किया।

महंगा कृत्रिम पांव गरीबी के कारण लगवाना संभव नहीं हुआ। नारायण सेवा संस्थान में निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाने की जानकारी मिलने पर पिछले दिनों पिता–पुत्री उदयपुर आए।

संस्थान के ऑर्थोटिस्ट ने केदार के लिए सुविधाजनक कृत्रिम पैर बनाया। जिसे पहनकर वह खुशी–खुशी गांव लौट गई।

अमन अब उठ-बैठ सकेगा

अमन केशरवानी चार साल का है। जब यह मात्र 7 माह का था, तभी दाएँ पाँव की नसों में रक्त संचार कम हो गया व पाँव की मसल्स कठोर होने लगी। माता–पिता श्रीमती स्वाति व श्री राकेश केशरवानी ने बताया कि स्थानीय अस्पतालों के इलाज के बाद मुम्बई के एक अस्पताल में पूरे शरीर की जाँच भी हुई और कुछ सप्ताह वहीं व्यायाम भी करवाया लेकिन स्थिति जस की तस रही। चलने व उठने–बैठने में इसे भारी तकलीफ होती है। घर पर ही पढ़ाते हैं।

पढ़ाई में बहुत होशियार है। टी.वी. पर नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में निःशुल्क ऑपरेशन होते देखा। हम यहाँ आए और ऑपरेशन हो गया। हमें पूरी उम्मीद है कि संस्थान की कृपा से अमन भी जरूर ठीक होगा। इलाज और देखभाल में कोई खामी नहीं रही। घर–परिवार सा वातावरण मिला।

भोजन और आवास भी हमें निःशुल्क उपलब्ध कराया गया। संस्थान दिव्यांग, निर्धन, असहाय लोगों की बड़ी सेवा कर रहा है। इसके संस्थापक श्री कैलाश जी 'मानव' स्वस्थ एवं दीर्घायु हो, यही कामना है।

सेवा जो संस्थान कर पाया

नाम– आशु (7 वर्ष), पिता– श्री देवेन्द्र जी,शहर– कालका, पिंजौर, हरियाणा, जन्म से ही दिव्यांग आशु को शहर के कई अस्पतालों में दिखाया, लेकिन कहीं पर भी इलाज नहीं हो पाया। टी.वी. पर संस्थान की जानकारी पाकर आशु को लेकर उसकी मां नारायण सेवा संस्थान में पहुँची। जांच के पश्चात् आशु के पांव का ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन के बाद वह अब पांव में पूर्व की अपेक्षा अधिक राहत महसूस कर रही है।

नाम –जितेन्द्र कुमार (15 वर्ष), पिता – श्री शिवजी शहर–सिमराव / भोजपुर (बिहार), जितेन्द्र जन्म से दिव्यांग, 15 वर्षों से रेंगती जिन्दगी का भार ढो रहा है। गांव के परिचित से संस्थान के बारे में जानकर पिता श्री शिवजी के मन में पुत्र के चलने की उम्मीद जागी, नारायण सेवा संस्थान में आकर पुत्र की जांच करवायी और जितेन्द्र के पहले पांव का एवं दूसरे पांव का सफल ऑपरेशन हुआ। जितेन्द्र अपनी दिव्यांगता से मुक्ति पाकर प्रसन्न है। जितेन्द्र अपने पैरों पर खडा होकर परिवार का सहारा बना।

नाम –राजदीपक, आयु–17 वर्ष, पिता–राकेश कुमार, पता–गाँव–बम्भोरी, जिला मेनपुरी (उ.प्र.)। एक पाँव में पोलियो था। घुटने पर हाथ रखकर चलाता था। पंजा एवं एड़ी टेढ़े थे, एक पड़ोसी उदयपुर में ही नौकरी करते हैं। उनसे संस्थान की जानकारी मिली और यहाँ आकर दिखाया। राज दीपक के पैरों का ऑपरेशन हुआ। एडी टिकने लगी है। पैर पर पूरा वजन देकर चलना–फिरना संभव हो गया है। पीड़ा से मुक्ति दिलाने के लिए संस्थान कर्मचारियों को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

नारायण सेवा का प्रयास, प्रभुकृपा का प्रसाद

संकेत खड़ा होगा चलेगा भी

वहेगाँव, जिला–बालाघाट (म.प्र.) निवासी अजयलाल बिशेन (पलस्तर मिस्त्री) का 9 वर्षीय पुत्र संकेत जन्म से ही पाँव पर खड़ा नहीं रह पाता था। नागपुर के एक निजी अस्पताल में इलाज भी हुआ।

साल भर एक्सरसाइज भी करवाई पर आराम नहीं हुआ। बालक के इलाज के लिए यहाँ आए अजयलाल व उनकी पत्नी श्रीमती सुनीता ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि कुछ समय पहले हमारे पड़ोस के गांव की एक बच्ची नारायण सेवा संस्थान के पोलियो चिकित्सालय से उपचार करवा कर लौटी थी। अब वह सामान्य कामकाज कर लेती और चलती–फिरती भी है। उससे सारी जानकारी लेने के बाद हम यहाँ आए। जाँच हुई और निर्धारित तिथि पर ऑपरेशन हो गया। यहाँ काफी दूर–दूर से पोलियो व सी.पी. ग्रस्त बच्चों व युवाओं को देखा जो ऑपरेशन के बाद खुश हैं।

हमें भी उम्मीद है कि संकेत खड़ा होगा और चलेगा भी। यहाँ इलाज, आवास, भोजन निःशुल्क है। देखभाल भी बहुत अच्छी है। हम तो दानदाताओं से यही करबद्ध प्रार्थना करेंगे कि वे संस्थान को ज्यादा से ज्यादा सहयोग करें ताकि हम जैसे गरीबों के बच्चे इलाज पाकर मायूसी से उबर सकें।

संतुष्टि के भाव

11 वर्ष का शुभम्, गांव चिराउबेड़ा, जिला–सहारनपुर, उत्तरप्रदेश श्री शिवकुमार का पुत्र है। शुभम् जब 10 माह का था तभी बुखार में पोलियो हो गया। कई शहरों में दिखाया, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। एक रिश्तेदार ने –जो अपने बेटे का इलाज संस्थान में करवा चुके थे, उन्हें संस्थान के बारे में बताया। इस तरह संस्थान में पहुंचे। पांव की जांच के बाद शुभम् के पैर के तीन ऑपरेशन हुए। शुभम् शीघ्र अपने पैरों पर खड़ा हो सकेगा – श्री शिवकुमार इस सम्भावना से पूरी तरह सन्तुष्ट है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

सम्पादकीय

प्रेम और वैर दो विपरीत ध्रुव हैं। जितने संत, महापुरुष एवं ग्रंथकार हैं उन्होंने सदैव प्रेम की शिक्षा दी है। वे प्रेम के पक्षधर हैं। हम भी प्रेम के बारे में खूब पढ़ते और सुनते रहे हैं। पर यह रंग हम पर चढ़ा कितना ?

हमें किसी ने भी वैर करना नहीं सिखाया। न विद्यालयों ने और न सामाजिक संगठनों ने। फिर हम कैसे वैर सीख गये। वैर ईर्ष्या का स्थूल रूप होता है। जब हम किसी से ईर्ष्याभाव रखते हैं तो अकारण ही उससे वैर पाल लेते हैं। वैर का यह भाव उसका तो कुछ बिगाड़े ना बिगाड़े पर हमारा तो सत्यानाश ही कर देगा। जैसे ही व्यक्ति के अंतस् में वैर–भाव की उत्पत्ति होती है, उसकी चिंतन क्षमता, आभा, विचार शक्ति और व्यवहार कौशल में क्षति होना प्रारंभ हो जाती है। यह तत्काल तो मालूम नहीं पड़ता पर कालान्तर में इसके दुष्प्रभाव दुष्वृत्तियों के रूप में दृष्टिगत होने लगते हैं। इससे बचने का उपाय यही है कि ईर्ष्या त्यागें ताकि वैर उपजे ही नहीं।

कुछ काव्यमय

आपस में यदि वैर है,
उन्नति क्यों कर होय।
और मिले यह तो कठिन,
जो है सो भी खोय।।
वैर–भाव से जो जीये,
तो जीवन बेकार।
बस सांसें ही ली यहाँ,
निकला कुछ का सार।।
नहीं किसी से वैर हो,
नहीं पराया कोय।
प्रेम नीर ले हाथ में,
कलुष हृदय का धोय।।
वैर हमेशा सालता,
मन का छीने चैन।
मन व्याकुल होता रहे,
दिन होवे या रैन।।
वैर विचारों को तजो,
मन पावे संतोष।
शान्त सुखी जीवन बने,
मिटे भयंकर दोष।।

- वरदीचन्द राव

याद रखें
है सुरक्षा में
सबकी भलाई
जो है जीवन
की कमाई।

अपनों से अपनी बात

प्रभु के चमत्कार : प्रभु के काम

प्रभु अपना कार्य करवाने के लिए जिस विधि से अपने सेवक चुनता है वह विधि जितनी रोचक और रोमांचक है, उतनी ही आश्चर्यजनक भी। कैसे–कैसे योग विठाता है प्रभु, कैसे जोड़ता है अपने भक्तों को आपस में, और कैसे उनसे काम करवाता है? आप भी जानेंगे तो प्रभु शक्ति और प्रभु कृपा के कायल हो जायेंगे। ऐसा ही हुआ था। संस्थान का पहला पोलियो हॉस्पीटल बनवाने वाले स्व.सेठ श्री चेनजराज जी लोढा सा. के जब मुझे पहली बार दर्शन करने का सुयोग मिला।

पाली जिले में बिजोवा गांव है। वहां के नेत्र चिकित्सा शिविर में, जो मेरे सेवा–प्रेरणा स्रोत परमपूज्य श्री राजमल जी जैन सा. के द्वारा लगाया गया था। मैं जैसे ही गया वहां बैठा, भाई सा. के चरण स्पर्श किये। उन्होंने कहा कैलाश जी ! आप घाणेराव कैम्प में जरूर आना। इसलिए कि यहां के एक सेठ सा. 'चैनराज जी लोढा सा. है।' उन्होंने पढ़ी थी 'सेवा संदीपन।' उससे वे बड़े राजी हुए यह कहते थे कि कैलाश जी से मिलना है मुझे एक–दो बार कहा है। मैंने कहा सा. जरूर आऊँगा।

मन में कुछ उधेड़बुन कि अभी तो मैं छह दिन की छुट्टी लेकर आया हूँ। चार दिन बाद ही कैम्प है। अफसर कैसे छुट्टी देंगे सोचा, मुझे तो आना ही होगा, क्योंकि सेठ सा. मिलना चाहते हैं। इतनी देर में पन्द्रह मिनट बाद ही काला कोट, धोती, सफेद बाल–कुछ काले बाल। एक पतला–दुबला आदमी पैरों में 20 रुपये की चप्पल पहनकर आया आते ही कहा राजमलजी। उन्होंने कहा अरे! कैलाश जी! जिनसे मिलने के लिए मैं आपसे कह रहा था, वह तो यहीं आ गए। मैंने बड़े प्रेम से प्रणाम किया।

चैनराज जी लोढ़ा के प्रथम बार दर्शन किए थे। मेरे प्रणाम का जवाब दिया। फिर वह राजमलजी भाई से बातों में लीन हो गये। कहने लगे घाणेराव का कैम्प बहुत बढ़िया होना चाहिए। शुद्ध देशी घी के फुलके बनेंगे, पूड़ी बनेगी। रोगी अपना भगवान है मैं रोगियों के लिए कम्बल ला रहा हूँ। मैं रोगियों को थाली–कटोरी भी दूंगा इत्यादि इत्यादि बातें होने लगी।

मैं बड़ा प्रभावित हुआ। समय आने पर मैंने कहा कि –"पूज्यवर जी लोढ़ा सा., बाबूजी सा. आप उदयपुर जरूर पधारें।" उन्होंने कहा कि हाँ हाँ मेरी बड़ी इच्छा है जरूर आँऊगा और इस तरह संस्थान के मानव मंदिर पोलियो हॉस्पीटल के जनक से मेरी अनपेक्षित भेंट हुई। ऐसे ही होते हैं प्रभु के चमत्कार, प्रभु के काम।

–कैलाश 'मानव'

जैसा बाँटेंगे, वैसा पाएँगे

एक किसान था, जिसके खेत में बहुत अच्छी फसल होती थी, जिसकी वजह से वह पूरे क्षेत्र में चर्चित हो गया था।

एक दिन दूसरे गांव के कुछ लोग, उसकी इस सफलता का राज जानने के लिए, उसके पास पहुँचे। जब वे उसके खेत में गए तो उन्होंने देखा कि वह किसान आस–पास के खेत वाले किसानों को बुलाकर उन्हें बीज बांट रहा था और कह रहा था कि तुम भी मेरे जैसी अच्छी फसल उगाओ।

ये देखकर उससे मिलने गए दूसरे गांव के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ और सोचने लगे कि अगर ये किसान सभी को अच्छे बीज बांट देगा और सबके खेत में अच्छी फसल होगी तो फिर इसे कौन पूछेगा ? एक व्यक्ति ने कहा कि आप सबको ये बीज क्यों बांट रहे हैं ?

किसान ने बहुत सुंदर जवाब दिया, बोला –जब मैं सबको ये बीज बांटता हूँ तो इसकी वजह से मेरी फसल अच्छी होती है।

सबने पूछा – वो कैसे ?

किसान बोला – मैं जब अपने पड़ोसी किसानों को अच्छे बीज बांटता हूँ तो उसके खेत में अच्छी फसल होती है और जब हवाएँ चलती हैं तो आसपास के खेतों से वही बीज उन हवाओं के साथ लौटकर मेरे खेत में भी आते हैं तो मेरी फसल तो अच्छी होगी ही। अगर हम खराब बीज बांटेंगे तो लौटकर हमारे पास खराब बीज ही आएँगे। सबको उसका सिद्धांत समझ आ गया।

यही जिंदगी का सिद्धान्त है, प्रकृति का नियम है –जैसा आप बांटेंगे, वैसा ही पायेंगे।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

सेवा और नौकरी के बीच कैलाश का समय यूंही व्यतीत होता रहा। सेवा के पथ पर तो वह बहुत आगे बढ़ गया था मगर नौकरी वहीं के वहीं थी। नौकरी में भी वह आगे बढ़ना चाहता था। पोस्ट ऑफिस की सेवा में प्रगति के लिये विभिन्न तरह की परीक्षाएं थीं। उसने पोर्म्स एकाउन्ट परीक्षा पास कर प्रगति की ही थी, एक अन्य परीक्षा आई.पी.ओ.–इन्सपेक्टर ऑफ पोस्ट ऑफिस भी होती थी। कैलाश की अब यह परीक्षा पास करने की इच्छा जागृत हो गई। यह प्रतियोगी परीक्षा थी जिसके लिये काफी मेहनत करनी पड़ती थी। कैलाश कुछ अनुभवी लोगों से मिला और इस परीक्षा के बारे में पूछा। सबने यही बताया कि इस परीक्षा को पास करने के 6 अवसर मिलते हैं। सामान्यतः चौथे–पांचवे मौके में प्रतियोगी पास हो ही जाता है। यह सुन किसी भी प्रतियोगी का प्रसन्न हो जाना स्वाभाविक है मगर कैलाश की गंभीर मुख मुद्रा देख उसका साथी आश्चर्यचकित रह गया।

कैलाश से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि अन्य लोगों के लिये भले ही 6 अवसर हों, मगर मेरे लिये तो एक ही अवसर है, इसी में परीक्षा उत्तीर्ण करना जरूरी है।

कैलाश की बात सुनकर उसका साथी अवाक् रह गया मगर अगले ही क्षण व्यंग्य करता हुआ बोला–क्यूं भाई ? क्या तुम्हारे लिये नियम अलग हैं जो तुम्हें एक ही अवसर मिलेगा। कैलाश ने उसके कटाक्ष का बुरा नहीं मानते हुए अपनी मजबूरी बताई कि क्यूं उसके लिये परीक्षा एक ही अवसर में उत्तीर्ण करना आवश्यक है। छोटा सा घर है, पढ़ने बैठता हूं तो पत्नी सब काम छोड़ कर बच्चों को चुप कराने में लग जाती है, मैं जितनी देर पढ़ता हूं उतनी ही देर मेरे पास बैठकर किसी भी प्रकार का व्यवधान नहीं होने देती जिससे मैं शांतिपूर्वक पढ़ाई कर सकूं। अगर मैंने पहले ही अवसर में परीक्षा पास नहीं की तो अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अन्याय होगा। कैलाश की बात से उसका साथी भी द्रवित हो गया और उसकी सफलता की कामना करने लगा।

अंश - 67

गुरु पूर्णिमा

गुरु को नमन

गुरु ब्रह्मा, विष्णु और महेश है। गुरु तो परम ब्रह्म के समान होता है, गुरु की बहुत महत्ता बताई गई। गुरु का स्थान समाज में सर्वोपरि है। गुरु उस चमकते हुए चंद्र के समान होता है, जो अंधेरे में रोशनी देकर पथ–प्रदर्शन करता है। गुरु के समान अन्य कोई नहीं होता है, क्योंकि गुरु भगवान तक जाने का मार्ग बताता है।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु अपने गोविन्द दियो बताय।।

जो व्यक्ति इतना महान हो तो उसके लिए भी एक दिन होता है, वह दिन है 'गुरु पूर्णिमा'। गुरु पूर्णिमा आषाढ़ की पूर्णिमा को मनाया जाता है। गुरु पूर्णिमा, गुरु की आराधना का दिन होता है।

गुरु पूर्णिमा को आषाढ़ पूर्णिमा, व्यास पूर्णिमा और मुडिया पूनो के नाम से जाना जाता है। यह एक पर्व है जिसे लोग त्योहार की तरह मनाते हैं। यह संधिकाल होता है, क्योंकि इस समय के बाद से बारिश में तेजी आ जाती है। पुरातन काल में ऋषि, साधु, संत एक स्थान से दूसरे स्थान यात्रा करते थे। चौमासा या बारिश के समय वे 4 माह के लिए किसी एक स्थान पर रुक जाते थे। आषाढ़ की पूर्णिमा से 4 माह तक रुकते थे, यही कारण है कि इन्हीं 4 महीनों में प्रमुख व्रत त्योहार आते हैं।

इस दिन को मंदिरों, आश्रमों और गुरु की समाधियों पर धूमधाम से मनाया जाता है। भारत में पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक सभी जगह गुरुमय हो जाती है।

गुरु पूर्णिमा आषाढ़ की पूर्णिमा को ही क्यों मनाया जाता है? आषाढ़ की पूर्णिमा को यह पर्व मनाने का उद्देश्य है कि जब तेज बारिश के समय काले बादल छा जाते हैं और अंधेरा हो जाता है, तब गुरु उस चंद्र के समान है, जो काले बादलों के बीच से धरती को प्रकाशमान करते हैं। 'गुरु' शब्द का अर्थ ही होता है कि तम का अंत करना या अंधेरे को खत्म कर देना है।

अनुभव अमृतम्

बहुत मुश्किल से एक गाड़ी रूकी। इन्सानजी ने प्रयत्न किया, अब गाड़ी रूकी जैसे ही रोगी को, घायल को उसमें लेटाने लगे पुलिस वाले ने कहा– नहीं नहीं कैसे ले जा सकते हो आप? अभी तो इनका पंचनामा बनेगा अभी पुलिस वाले अफसर आऐंगे सीआई. साहब। इनसे बयान लिये जाऐंगे, कैसे एक्सीडेन्ट हुआ? कहाँ जा रहे थे? तीन–चार दिन तो लगेंगे। फिर ले जा सकते हो। नाम– पता लिखेंगे। इधर खून बह रहा है, इधर ये कह रहे है– पंचनामा करेंगे, बयान लेंगे। मैंने पुलिस वालों को कहा– आपका भाई होता तो आप यही बात कहते? क्या उसके इलाज के लिए सिरोही नहीं भेजते। जैसे ही ये कहा– अच्छा ले जाओ मैं मुँह फेर लेता हूँ। मुँह फेर के खड़ा हो गया। पांच–छः घायल एक गाड़ी में, आठ–दस दूसरी गाड़ी में, चार–पाँच गाड़ियों में गाड़ियाँ सिरोही की तरफ मुड़ी। मेरी बांयी और दायी जंघा पे दो दो–तीन घायल लेटे हुए थे, सिर लगा हुआ था। लाल–लाल खून बड़ी मुश्किल। ये बाईस किलोमीटर जल्दी से निकल जावे, सिरोही जल्दी आ जावे, प्रभु से प्रार्थना। पीर हरो प्रभु, प्रभु शरणम प्रभु शरणम। हे! भीण्डेश्वर महादेवजी जल्दी से सिरोही पहुँचा दो। हे! रघुनाथजी महाराज, रघुनाथद्वारा, हे! भट्टजी महाराज, भागवतजी की कथा मैंने बचपन में आपके पैर दबाए थे– महाराज जी। पंखा किया, बींजणा किया। आप उसका फल दे दीजिए, आशीर्वाद दे दीजिए। इनकी डेथ ना हो। रास्ते में इनकी सांस रूक गई तो क्या होगा? हे! भगवान इनको बचा देना। जल्दी सिरोही पहुँचा देना। मोबाईल थे नहीं। पिण्डवाड़ा से ही कमलाजी को फोन कर दिया था– कपड़े हो तो गांठ बांध कर ले आना।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 194 (कैलाश 'मानव')

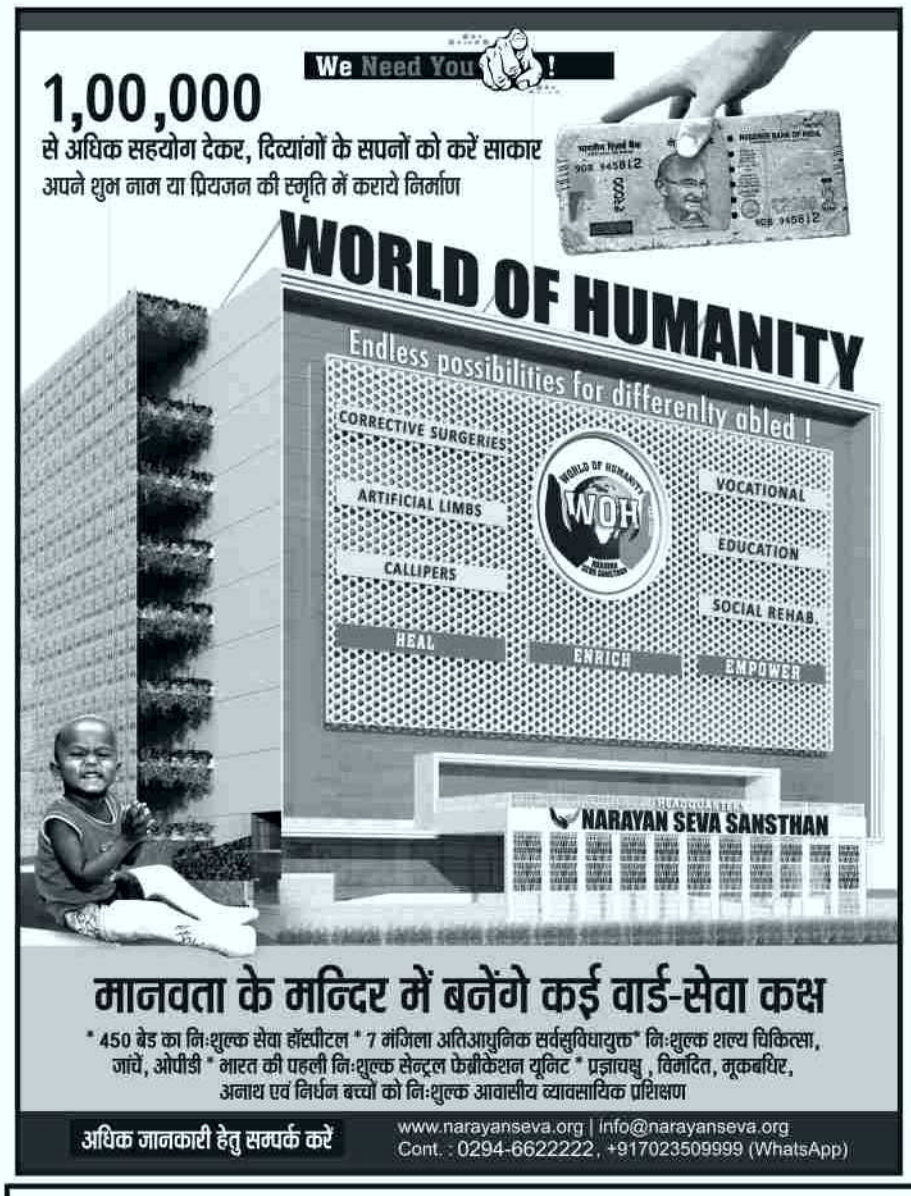

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023